.. Shri Vishnustavan by Markendeya in Narasimhapurana ..

॥ तीर्थस्नानफलप्रदम् श्रीविष्णुस्तोत्रं नरसिंहपुराणे ॥

Document Information

Text title : tIrthasnAnaphalapradam shrI viShNustotra narasiMha-purANe

File name : tIrthasnAnaphalapradamviShNustotramNP.itx

Location : doc_vishhnu

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Proofread by : Singanallur Ganesan singanallur at gmail.com

Translated by : https://archive.org/details/NarsimhaPuranGitapress

Description-comments : Narasimhapurana adhyAya 10 verses 21-28

Latest update : June 6, 2013

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : http://sanskritdocuments.org

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

August 3, 2016

sanskritdocuments.org

॥ तीर्थस्नानफलप्रदम् श्रीविष्णुस्तोत्रं नरसिंहपुराणे ॥

वागुवाच
स्तोत्रेणानेन विप्रेन्द्र स्तुहि नारायणं प्रभुम् ।
नान्यथा सर्वतीर्थानां फलं प्राप्स्यसि सुव्रत ॥ १॥

मार्कण्डेय उवाच
तदेवाख्याहि भगवन् स्तोत्रं तीर्थफलप्रदम् ।
येन जप्तेन सकलं तीर्थस्नानफलं लभेत् ॥ २॥

वागुवाच
जय जय देवदेव जय माधव केशव ।
जय पद्मपलाशाक्ष जय गोविन्द गोपते ॥ ३॥

जय जय पद्मनाभ जय वैकुण्ठ वामन ।
जय पद्म हृषीकेश जय दामोदराच्युत ॥ ४॥

जय पद्मेश्वरानन्त जय लोकगुरो जय ।
जय शङ्खगदापाणे जय भूधरसूकर ॥ ५॥

जय यज्ञेश वाराह जय भूधर भूमिप ।
जय योगेश योगज्ञ जय योगप्रवर्त्तक ॥ ६॥

जय योगप्रवर्तक जय धर्मप्रवर्त्तक ।
कृतप्रिय जय जय यज्ञेश यज्ञाङ्ग जय ॥ ७॥

जय वन्दितसद्द्विज जय नारदसिद्धिद ।
जय पुण्यवतां गेह जय वैदिकभाजन ॥ ८॥

जय जय चतुर्भुज श्री जयदेव जय दैत्यभयावह ।
जय सर्वज्ञ सर्वात्मन् जय शंकर शाश्वत ॥ ९॥

जय विष्णो महादेव जय नित्यमधोक्षज ।
प्रसादं कुरु देवेश दर्शयाद्य स्वकां तनुम् ॥ १०।

अध्याय १० श्लोक १९-२८, अध्याय श्लोक संख्या ५२
श्रीनरसिंहपुराणे मार्कण्डेयचरित्रे दशमोऽध्यायः ॥ १०॥

From Narasimhapurana adhyAya 10
https://archive.org/details/NarsimhaPuranGitapress

Proofread by Singanallur Ganesan singanallur at gmail.com

.. Shri Vishnustavan by Markendeya in Narasimhapurana ..
was typeset on August 3, 2016

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*